IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शक्ति स्वरूप

डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याता
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

प्रस्तावना :–

हयग्रीव कृत शाक्त दर्शनम् में 18 अध्याय, एक सौ प्रकरण एवं 1360 सूत्र हैं। सूत्रकार हयग्रीव द्वारा स्वयं कहा गया है कि इस ग्रंथ की विद्या पंचदशी है एवं ब्रह्म विद्या इसका मार्ग है। आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जी ने इसकी व्याख्या बोधगम्य की है। आचार्य दुर्गाचरण जी के ग्रन्थ ऋषि हयग्रीवकृत शाक्तदर्शनम् एवं अगस्त्यकृत शक्तिसूत्रम् के अनुसार हयग्रीवकृत 'शाक्तदर्शनम्' पराद्वैत शैवमत से प्रभावित शाक्त तन्त्र ग्रन्थ है।

शक्ति निरूपण– हयग्रीवकृत शाक्त दर्शनम् के प्रथम अध्याय के प्रथमपाद में लिखा है कि शक्ति विचित्र जगत की सामर्थ्य रूपा है। शक्ति ब्रह्म से भिन्न नहीं है एवं अभिन्न भी नहीं है। शक्ति व ब्रह्म में जैसे प्रकाश व अंधकार का एकत्र संबंध है, वह संबंध भी नहीं है, वह अनिर्वचनीय है। जैसे गाढ़निद्रावस्था में जब इन्द्रियों का व्यापार शांत रहता है, तब अज्ञान अलग से अनुभव नहीं रहता दूसरे के अभाव में ऐक्या का ही बोध होता है, वैसा ही तादात्म्य संबंध शक्ति व आत्मा में है। आत्मा अद्वितीय है। ब्रह्म से आरोपित जगत होने से आत्मा, शक्ति, ब्रह्म में तादात्म्य संबंध है।

"विचित्र जगन्निर्माणादिसामर्थ्यरूपा शक्तिः। न भिन्ना। नाभिन्न। भेदाभेदा। नैकत्रतमः प्रकाशयोरिव। कल्पित– भेदाभेदनिर्वचनीयतादात्म्यसंबन्धः। न सुषुप्तावात्मन्यज्ञानं पृथग्भाति। अद्वितीय आत्मा। ब्रह्मण्यारोपितजगत्वात् परमप्यद्वितीयम्।"[1]

जहाँ शक्ति विचित्र जगत आदि के निर्माण में सामर्थ्य रूपा जो कहा गया है इसका आशय यह है कि विचित्र, जगत् एवं सामर्थ्य रूपा विचित्र जगत् आदि शब्द से जिसने विभिन्न प्रकार के कर्मों के फलों का प्रमाण भोग्य है ऐसी विचित्र सृष्टि जिसमें अनेक प्रकार के पदार्थ हों, भौतिक आध्यात्मिक शरीर धारी प्राणी हों ऐसी सृष्टि का निर्माण करने की सामर्थ्यरूपा वह शक्ति है। ऐसे विश्व को सृजन करने की सामर्थ्य रखने वाली वह शक्ति है जिसकी शिल्पी कल्पना भी नहीं कर सकते। यहाँ पर शक्ति को ब्रह्म की सामर्थ्य रूपा भी समझ सकते हैं। शक्ति व ब्रह्म का संबंध क्या है इसके लिए कहा गया कि शक्ति–ब्रह्म भिन्न नहीं हैं एवं अभिन्न भी नहीं हैं, दोनों का अनिर्वचनीय संबंध है। ब्रह्म और आत्मा के बीच में तादात्म्य संबंध होने से आत्मा, शक्ति, एवं ब्रह्म में तादात्म्य संबंध है। ब्रह्म व शक्ति संबंध सुषुप्ति अवस्था में इन्द्रिय व्यापार न होने पर, अज्ञान का पृथक अनुभव नहीं रहता दूसरे के अभाव में आत्मा में ऐक्या का ही ज्ञान होता है वैसे ही शक्ति व आत्मा का तादात्म्य संबंध है और फिर ब्रह्म व आत्मा में तादात्म्य संबंध होने से आत्मा, शक्ति व ब्रह्म में तादात्म्य संबंध है।

शक्ति द्वैविध्य– हयग्रीवकृत 'शाक्त दर्शनम्' में कहा गया है कि शक्ति के द्विविध रूप हैं– ''शक्तिर्द्विधा। विद्याऽविद्येति। निगुणं गौतमः। शान्तिमूल प्रकृतिगं साक्षिणं मुद्गलः। साभासामीश्वरीं हयग्रीवः।''[2]

अब सूत्रकार हयग्रीव शक्ति को दो रूप में बताते हैं विद्या एवं अविद्या। आत्मा निर्गुण है गौतम के अनुसार । वही मुदगल कहते हैं कि गुणों की साम्यावस्था युक्त मूल प्रकृतिगत साक्षी स्वरूप ही आत्मा है। सूत्रकार हयग्रीव अंत में कहते हैं 'साभासामीश्वरीं हयग्रीवः' आत्मा प्रकाश रूप चित्तशक्ति से युक्त ईश्वरी भुवनेश्वरी ही है। अतः भुवनेश्वरी ही आत्मा है। पं0 दुर्गाचरण शुक्ल ने अपने ग्रन्थ में लिखा है– 'साभासा आभास युक्ता नाम प्रकाश स्वरूपचित युक्ता' अर्थात् साभासा का अर्थ है प्रकाश स्वरूप चित शक्ति से युक्त। वहीं त्रिपुरा रहस्य ग्रन्थ में– 'स्वातन्त्र्यं भगवत् चित् शक्तिः' कहकर परमेश्वर की स्वातंत्र्य शक्ति ही चित शक्ति कहा है। वह चित शक्ति है शुद्ध, अपरिमित, संवित, परिपूर्ण अर्थात् प्रकाश और विमर्श का सामरस्य। प्रकाश व विमर्श की व्याख्या करते हुए लिखा गया है कि प्रकाश चेतना का स्वाभाविक स्वभाव है और उसमें चेतन पदार्थ स्वयं आभासमान होता है। वहीं विमर्श तो प्रकाश की आत्म प्रतिति, संवेदना है, इस तरह पराशक्ति सभासामीश्वरीं का अर्थ हुआ। हयग्रीव के मतानुसार भुवनेश्वरी ही पराशक्ति है और वही सर्वेश्वरी है।

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल कृत ऋषि हयग्रीवकृत 'शाक्तदर्शनम्' एवं अगस्त्यकृत 'शक्ति सूत्रम्' ग्रन्थ में शक्ति का निरूपण, द्विविधता के अनन्तर शक्ति के दो रूप विद्या एवं अविद्या का निरूपण किया गया है। सर्वप्रथम विद्या के स्वरूप को प्रकाशित करते हुए लिखा है–

"ईश्वरी विद्या। चित्प्रतिबिम्बयुक्ता मायाशक्तिः। जगत्कारणम्। निमित्तोपादानम्। जडयोपादानम्। चिदान्यत्। एषा भुवनसुन्दरी ब्रह्मविद्या। साऽकामयत। तदेव कालः। सा सावित्री गुणान्। सात्विकी महालक्ष्मीः। सरस्वती राजसी। तामस्युमा।"[13]

वह भुवनेश्वरी जिसका वर्णन पूर्व में हुआ वही ईश्वर है। वे ही भुवनसुन्दरी विद्या है और वह विद्या माया भी कही जाती है जब उसी विद्या में चैतन्य प्रतिबिम्बित होता है। जगत के निर्माण में वह उपादान कारण है और निमित्त कारण भी है। उपादान कारण अर्थात् जिस पदार्थ से वस्तु निर्मित हो वह उपादान कारण है एवं निमित्त कारण अर्थात् वह पदार्थ जो वस्तु का चैतन्य युक्त निर्माण करता है। जगत का निर्माण करने के लिए माया चैतन्य प्रतिबिम्बित स्वरूप से अर्थात चित् स्वरूप का उपयोग करती है। जगत का निमित्त कारण यही माया है और विश्व का उपादान कारण यह माया जड़ शक्ति के रूप में बनती है क्योंकि जड़ माया ही जगत बनाती है। अब आगे कहते है कि यही माया भुवनसुन्दरी ब्रह्मविद्या है। इस भुवनसुन्दरी की कामना/संकल्प काल कहलाता है। ऐसा ही कथन तैत्तिरीय उपनिषद में प्राप्त होता है– 'सोऽकामयत बहुस्यां प्रजायेम'।[4] उसने कामना की कि मैं बहुत हो जाऊँ। इसी तरह ऐतरेय उपनिषद कहते हैं 'स ऐक्षतलोकान्नुसृजे'।[5] उसने इच्छा की लोकों का सृजन करूं। ऐसे ही छान्दोग्य उपनिषद में भी कहा गया है कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ ''तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेम''।[6] पराशक्ति भुवनेश्वरी का यही संकल्प काल कहलाएगा और क्रिया का जो क्रम है वह काल है। इस क्रम के आधार पर कल्पना से भूत, वर्तमान, भविष्य की अवधारणा का संस्कार–संकल्पन ही काल कहा जाता है। इसी भुवनेश्वरी विद्या ने सत्व, रज, तम गुण बनाए और फिर सत्वगुण युक्त भुवनेश्वरी महालक्ष्मी, रजोगुणयुक्त सरस्वती एवं तमोगुणयुक्त उमा नाम से भुवनेश्वरी प्रसिद्ध हुई।

शक्ति के विद्या रूप के बाद अविद्या निरूपण भी किया गया है–

''नाना भेदात्मकमोहदायिन्यविद्या। एषा व्याकृतमयी। एषान्तर्यामिन्युमा''।[7] तमोगुणयुक्त उमास्वरूप सृष्टि में स्थित अनेक भेदों को सत्य के समान दिखाकर मोह उत्पन्न करती है और विश्व को विविध रूपों में दर्शाती है। इस प्रकार मोह एवं भेद उमा ही दिखाती है। इसके अतिरिक्त अन्त में स्थित रहकर अन्तर्यामनी शक्ति कहलाती है।

शक्ति स्वरूपों से सृष्टि उत्पत्ति– शक्ति के विद्या एवं अविद्या रूपों का निरूपण करने के बाद अब आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल द्वारा ऋषि हयग्रीव कृत 'शाक्तदर्शनम्' एवं अगस्त्यकृत 'शक्तिसूत्रम्' में शक्ति स्वरूपों को दर्शाकर सृष्टि का वर्णन किया है। शाक्त दर्शनम् में हयग्रीव कहते है भुवनसुन्दरी का जो स्वरूप उमा है उस स्वरूप से सदाशिव प्रकट हुए हैं। मनोन्मनी स्वरूप महेश को उत्पन्न करता है। पार्वती स्वरूप से रूद्र प्रकट हुए और काली स्वरूप से विष्णु उत्पन्न हुए। साथ ही रमा स्वरूप से ब्रह्मा उत्पन्न हुए। इस तरह इन पांच स्वरूपों से पांच प्रमुख देवता– सदाशिव, महेश, रूद्र, विष्णु एवं ब्रह्मा प्रकट हुए हैं। ब्रह्मा से ब्रह्माण्ड प्रकट हुआ और उसी ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा प्रविष्ट हो गए। ''तत्सृष्टवा तदैवानु प्रविशत्''।[9] वह प्रजापति ब्रह्मा सृजन करके उसी ब्रह्माण्ड में प्रविष्ट हो गया ऐसा ही कहा गया है। ये पंचदेव विश्व के कर्त्ता कहे जाते है। शक्ति स्वरूपों से सृष्टि उत्पत्ति बताने के बाद भगवान हमग्रीव आत्मा के चतुष्पाद स्वरूपों को वर्णित करते हैं– वैश्वानर आत्मा (विराट) सरस्वती स्वरूप है, ब्रह्मरूप है, रजोगुण से युक्त है। तमोगुण से युक्त प्राज्ञ आत्मा उमा स्वरूप है रूद्र रूप है। सत्व गुण से युक्त तैजस्व आत्मा (हिरण गर्भ) लक्ष्मी स्वरूप, विष्णु रूप है। इसी तरह त्रैगुणमय तुरीय आत्मा त्रिपुर सुन्दरी स्वरूप अक्षर रूप है।

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल के ग्रन्थ में लिखा है कि शक्ति स्वरूपा भगवती भुवनसुन्दरी के स्वरूपों से उत्पन्न हुए देव ब्रह्मा सृष्टिकर्ता, विष्णु पालनकर्ता एवं रूद्र संहारकर्ता है। सदाशिव अनुग्रहकर्ता एवं महेश्वर निग्रहकर्ता है। सृष्टि में तमोगुणी रूद्र, रजोगुणमय ब्रह्मा, सत्वगुणमय विष्णु एवं सृष्टि त्रिगुणमयी है। अतः इस सृष्टि में जो कि त्रिगुणमयी है उसमें सत्व, रज व तम गुण युक्त तीनों देव प्रमुखता के साथ अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं।

हयग्रीव ने बताया कि शक्ति स्वरूपा श्री भुवनेश्वरी एक तत्त्व है और वही सृष्टि के विविध रूपों में अभिव्यक्त है। जा ब्रह्म रूप है, वह वैश्वानर आत्मा रजोगुणी सरस्वती का स्वरूप है। तैजस्य आत्मा सात्विकी लक्ष्मी स्वरूप, विश्वरूप है। रूद्र रूप में प्राज्ञ आत्मा तामसी उमा स्वरूप है। भगवती त्रिपुर सुन्दरी का ही रूप तुरीय आत्मा अक्षर स्वरूप भुवनेश्वरी स्वरूपा त्रिगुणमयी है। इस प्रकार सृष्टि व आत्मा मूल रूप से एक ही तत्त्व हैं जो कि शक्ति स्वरूपा भुवनेश्वरी हैं।

'ऋषि हयग्रीवकृत शाक्त दर्शनम् एवं अगस्त्य कृत शक्ति सूत्रम्' ग्रन्थ में आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जी ने लिखा है कि आगम ग्रन्थ कहते हैं कि सदाशिव नादस्वरूप है, उनकी विद्या देह है, वे अनुग्रहकर्ता हैं, कृपा स्वरूप है। 'विद्या देह स्वरूपेण ध्यात्वा देवं सदाशिवं'।[10] और नेत्र तंत्र कहता है कि देवताओं के देव सदाशिव हैं वे नादस्वरूप हैं– 'स नादो देव देवेशः प्रोक्तश्चैव सदाशिवः'[11] वही त्रिपुरा रहस्य में लिखा है कि 'पंचमोऽनुग्रहकारी'[12] अर्थात् सदाशिव स्वरूप जो पंचम स्वरूप है वह अनुग्रहकर्ता होने के कारण अनुग्रहकारी कहे जाते हैं।

महेश्वर यह परम शिव स्वरूप है और इसका कार्य निग्रहकर्ता है। स्वतंत्र तंत्र इस स्वरूप के लिए कहता है कि परम शिव का कालरूपी स्वरूप महेश है, वह सृष्टि, स्थिति संहार तीनों का प्रशासक है। जो भी अशुभ उसे मंगलमय देव नष्ट कर देता है। अशुभ व अमंगल को नष्ट करना निग्रह कहलाता है। इस प्रकार शिव के पांचों स्वरूपों का कार्य स्पष्ट किया गया।

शक्ति स्वरूप का वर्णन करते हुए हयग्रीव कहते हैं कि तीनों लोकों की जननी शक्ति है। 'त्रि' शब्द तीन लोकों के अभिप्राय से ही नहीं वरन् समस्त लोकों की जननी है, यह है। वह शक्ति नेत्री व दर्शिका है। परम ज्योति व ज्योति स्वरूप है। वही शक्ति आत्मा के रूप में 'तुरीय आत्मा' है, अक्षर स्वरूप है। देहधारण करने में समर्थ है। ऐसी शक्ति भक्त के वश में हो जाया करती है। मणिद्वीप एवं कारण लोक एक ही है और इसकी निर्वासनी शक्ति ही है। इसीलिए कारणेश्वरी है, सभी कारणों की स्वामिनी है। कार्येश्वर कार्यों के स्वामी ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं। कार्यरूप है। कारणाभिमानी रूद्र एवं रूद्र की शक्ति उमा है। गणेश शक्ति के प्रकाश स्वरूप में चित्तशक्ति है। वे शक्ति का कार्य कारण दोनों ही हैं। शक्ति मां व पुत्र गणश हैं। शक्ति की कामना काल अर्थात् हिरण्यगर्भ है जो कि तीनों गुणों का कारण है। और उस गुणों का कारण काल उसका कारण शक्ति है। इस तरह सृष्टि का कारण गणेश व गणेश का कारण शक्ति है। इस तरह शक्ति ही सृष्टि की कारण स्वरूपा है, शक्ति का कोई कारण नहीं है।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल कृत 'ऋषि हयग्रीवकृत शाक्त दर्शनम् एवं अगस्त्यकृत शक्ति सूत्रम्' ग्रन्थ में भगवान हयग्रीव मतानुसार शक्ति के स्वरूप को स्पष्टतः बताया गया है हयग्रीव कृत यह शाक्तदर्शन कादि मत का ग्रन्थ है, क्योंकि इसकी विद्या पंचदशी है एवं इसका मार्ग ब्रह्म विद्या है ऐसा स्वयं सूत्रकार हयग्रीव ने माना है। शुक्लजी के अनुसार सूक्ष्मदृष्टि से विचार करते है तो यह शाक्तदर्शनम् ग्रन्थ अद्वैत शाक्त दर्शन का है जो कि शैव दर्शन से समानता रखता है। उसकी मान्यता के अनुसार सम्पूर्ण जगत् वस्तुतः एक ही है, यही एक तत्व अपनी महिमा से अनेक रूपों से शुद्ध–अशुद्ध रूप से, स्वर्ग–नरक रूप से आदि रूप से दिखाता है जैसे नट अपने को विविध रूपों में दिखाता है। शक्ति तीनों लोकों की जननी है। शक्ति ही सृष्टि का कारण है। हयग्रीव का कथन है कि शक्ति ही ईश्वर है और यह ईश्वरी परम स्वतन्त्र है, परतन्त्र नहीं।

संदभ :–

1. श्री शाक्त दर्शनम्– 1/1/1–10
2. श्री शाक्त दर्शनम्– 1/1/11–15
3. श्री शाक्त दर्शनम्– 1/2/1–13
4. तैत्तरीय उपनिशद– 2/6/1
5. छांदोग्य उपनिशद– 6/2/3
6. ऐतरेय उपनिशद– 1/1/.....
7. श्री शाक्त दर्शनम्– 1/2/14–16
8. श्री शाक्त दर्शनम्– 1/3/1–20
9. तैत्तरीय उपनिशद– 2/6/1
10. स्वतंत्र तंत्र– 4,488
11. नेत्र तंत्र– 21/62–63
12. त्रिपुरा रहस्य– 135 पृ0
13. श्री शाक्त दर्शनम– 1/4/1–21

1. उमात्मनः सदाशिवः। मनोन्मन्या महेशः। पार्वत्या रूद्रः। कातूया विष्णुः। रमाया ब्रह्मा। ब्रह्मणो ब्रह्माण्डम्। तदेवानुप्रविशत्। ऐते पच्चकर्तारः। विराट् सरस्वती। लक्ष्मीर्हिरण्यगर्भः। अन्तर्यामिन्युमा। साक्षी भुवनसुन्दरी। विश्वो ब्रह्मा। विष्णु तैजसः। रूद्रः प्राज्ञः। तुरीयोऽक्षरः। राजसा ब्रह्मा। सत्वो विष्णुः। तामसो रूद्रः। शक्तिस्त्रैगुण्या।

2. शक्तिस्त्रिजननी। नेत्री। परं ज्योतिः। तुर्य देहात्मिका। इच्छाधृतविग्रहा। भक्तिवश्या। कारणलोकवासिनी। कारणलोकोमणिद्वीपम्। कारणेश्वररूपिणी। कार्येश्वरास्त्रयः। त्रयोहिरण्यगर्भाः। कारणाभिमानी रूदः। शक्तिरूमा। स्वाभासेन चिच्छक्तिपुत्रः। स वै गणेशः। कार्यकारणम्। कालस्त्रयाणाम्। स वै हिरण्यपुरूषः। गुणकालाः कार्यमयाः। गणेशः कार्यकारणम्। एका शक्ति कारणम्।